गोपिन कू समझाउँ तुरत छोड़ो सोच विचार।

तौ भगवन् मोकू जे बताओ मोए ब्रजवासिन ते कहा कहनी है किन किन के लिए कहा कहा संदेशौ है जो मोए वहाँ जायकै उन्हें सुनानौ है।

ठाकुर जी–भैया उद्धव सबसौ प्रथम संदेश तौ तुम मेरी माँ यशोदा सौ कहियौं।

उद्धव जी–हे गोविन्द मइया ते कहा कहनी है मोए बताओ।

ठाकुरजी–(गीत) उधौं मइया कू सुनइयो।
उद्धव एक काम और करियौं ये पत्रिका अपने हाथ में लेओ।

परम पवित्र तुम मित्र हो हमारे उधौ
अन्तर व्यथा की कथा मेरी सुन लीजियो।
ब्रज की वे ग्वाला जपें मेरी नित माला
हृदय ज्वाला थामे तन मन हू छीजियो
मेरे विश्वास रस रास आस मेन माही
मिलने की प्यास जान सावधान कीजियो।
प्रीत सौ प्रतीत सौ लिखी है रस रीत सौ
यह पत्रिका हमारी प्राण प्यारी को दीजियो।

और भइया उद्धव जा समय तुम या पत्रिका कू गोपिन के समक्ष श्री राधे को देओ तौ एक काम और करियौं। या कन्हैया की ओर सौ हाथ जोड़ कै उन सबसौ प्रार्थना करकै पूछियौं।

हे ललिते बृषभानु सुते मैंने कौन कियौ अपराध तिहारौ।
काढ़ दियौ ब्रजमण्डल सौ अब और हू दोष रह्यौ कछु भारौ।
अपनौ कर लेहू यहि मोहे देहू। कुंज कुटि यमुना कौ किनारौ।
अपनौ जान दया की निधान। भयी सो भयी अब वेगी संवारो।

उद्धव जी– हे यदुनाथ! आप नेकहू चिन्तित मत हो। मैं गयौ नाए कै आयो नाए। केवल दो ही दिना में समझाये कै तुरत ही आउँ और आये कै आपके चरनन के दर्शन करूँगो।

ठाकुरजी–बहुत सुन्दर उद्धव तुम अब विलम्ब मत करौ। आज मैं अपने हाथन सौं ही तुम्हारौ श्रंगार करूँगो और जा रथ सौ मैं ब्रज सौ आयौ हो वाही रथ में बैठ कै तुम ब्रज कू जाओगे। सारथी शीघ्रता करौ और जाओ हमारौ रथ तैयार करौ। और उद्धव या बात कू मत भूल जइयों।

ये पाती ले जाओ तुम करौ बात उपयुक्त
करकै चर्चा योग की करौ प्रेम सौ मुक्त।

उद्धवजी–हे प्रभु! आप नेकहू चिन्ता मत करौ। अब आप मेरे योग और ज्ञान कौ प्रभाव देखियों। मोए आज्ञा देओ महाराज।

तृतीय दृश्य

सूत्रधार– उद्धव अचरज में पड्यौ, देख बिरज कौ हाल।
चिंतातुर दीखे सभी, मानौ पडौ अकाल।।
श्रीकृष्ण के विरह में, नहीं दीखौ उल्लास।